'कितना बदल चुका है साहित्य? विषयक साहित्य सम्मिलन संपन्न

नारीवादी साहित्य कोई अलग इकाई नहीं है - प्रतिभा राय

» स्त्रीवादी साहित्य पुरुष विरोधी नहीं, पितृसत्ता को चुनौती देता है - महुआ माजी

हर हाथ में एक किताब होनी चाहिए - ममता कालिया

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी और राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साहित्यिक सम्मिलन के दूसरे दिन 'कितना बदल गया है साहित्य?' विषय पर तीन सत्रों में विचार-विमर्श हुआ। 'भारत का स्त्रीवादी साहित्यः नए आधार' विषयक सत्र की अध्यक्षता करते हुए ओड़िआ कथा लेखिका प्रतिभा राय ने कहा कि महिला लेखन की एक विशिष्ट आवाज, विश्वदृष्टि और जीवन के प्रति दृष्टिकोण होता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नारीवादी साहित्य कोई अलग इकाई नहीं है, बल्कि रचनात्मकता की एक विविध अभिव्यक्ति है। उन्होंने 15वीं सदी के ओड़िआ कवि बलराम दास के लक्ष्मी पुराण का उल्लेख करते हुए उन्हें भारत में नारीवादी साहित्य की नींव रखने का श्रेय दिया। इस सत्र के अन्य वक्ताओं में शामिल थीं - अनामिका, अनुजा चंद्रमौली, महुआ माजी, निधि कुलपति, प्रीति शेनॉय एवं तमिळची थंगपांडियन। हिंदी लेखिका अनामिका ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय नारीवादी साहित्य सीमाओं को आगे बढ़ा रहा है और रिश्तों को फिर से परिभाषित कर रहा है। तमिल लेखिका तमिळची थंगपांडियन ने भारत में पूर्वव्यापी और महत्वाकांक्षी मुद्दों पर चर्चा की, जिसमें तमिल और द्रविड़ संदर्भों पर ध्यान केंद्रित किया गया। उनके तीन मुख्य बिंदु थेः कौन बोलता है, कौन बोला, और किसकी कहानियाँ नारीत्व को आकार देती हैं। अंग्रेजी लेखिका अनुजा चंद्रमौली ने कहा कि नारीवादी साहित्य ने सदियों की चुप्पी और सेंसरशिप को तोड़कर सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया है। हिंदी लेखिका और सांसद महुआ माझी ने हिंदी साहित्य में महिलाओं के अभिव्यक्तिवादी और रचनात्मक लेखन की पड़ताल की, जिसमें नारीवाद के प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कहा कि महिलाओं के मुद्दों पर चर्चा पुरुष-विरोधी नहीं है, बल्कि पितृसत्तात्मक मूल्यों को चुनौती देती है। प्रख्यात मीडियाकर्मी निधि कुलपति ने कहा कि उन्हें लगता है कि समाज में महिला लेखन को शुरू में हाशिए पर धकेल दिया गया था, लेकिन समय के साथ इसका दायरा बढ़ा है। उन्होंने कहा कि महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, शिवानी और कृष्णा सोबती जैसी अग्रणी लेखिकाओं ने इसकी नींव रखी। अंग्रेजी लेखिका प्रीति शेनॉय ने कहा कि लेखन के माध्यम से, महिलाएँ शक्ति को पुनः प्राप्त करती हैं, एक शांत क्रांति को जन्म देती हैं जो हर शब्द और हर आवाज के साथ बढ़ती हैं, यथास्थिति को चुनौती देती हैं और परिवर्तन को प्रेरित करती हैं। 'साहित्य में परिवर्तन बनाम परिवर्तन का साहित्य' पर केंद्रित सत्र की अध्यक्षता अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह सत्र सम्मिलन के मुख्य विषय पर केंद्रित है, जो साहित्य और परिवर्तन के परस्पर संबंधों को समझने-समझाने में कारगर रहा। भारतीय भाषाओं के साहित्य के अनुवाद के माध्यम से ही हमारे सामने बहुत से परिवर्तन स्पष्ट होते हैं। इस सत्र में गिरीश्वर मिश्र, ममता कालिया, रश्मि नाजीरी, रीता कोठारी तथा यतींद्र मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात हिंदी विद्वान गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि साहित्य हमेशा अपने समय के यथार्थ को उसके परिवर्तनों के साथ अभिव्यक्त करता है। हिंदी की प्रख्यात लेखिका ममता कालिया ने कहा कि हम वैश्विक स्तर पर तथा तकनीकी स्तर पर हुए परिवर्तनों के साक्षी रहे हैं। इन परिवर्तनों ने साहित्य को गहरे प्रभावित किया है।